शिक्षण एक सामाजिक जिम्मेदारी भी है

रेखा पुरोहित
सहायक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय सौंराखाल
जखोली, रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड

प्रधानाध्यापक – सुर्जन लाल
भोजन माता – प्रमिला देवी
नामांकन – 45

सामाजिक बदलाव को गतिशील बनाने में सबसे अहम रोल एक विद्यालय का होता है जो समाज और शिक्षा को एक साथ जोड़ता है। वैसे तो एक समाज या एक संस्कृति के विकास और संवर्धन में विद्यालय की महती भूमिका होती है फिर भी सापेक्ष तौर पर एक विद्यालय, बच्चों के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जहाँ बच्चे न सिर्फ भाषा, गणित और विज्ञान जैसे विषय सीखते हैं बल्कि उसके साथ–साथ जिन्दगी जीने के हुनर और व्यावहारिकता को भी आत्मसात करते हैं। वैसे तो शिक्षा और समाज हमेशा से एक दूसरे पर निर्भर रहे लेकिन समय के साथ–साथ इनके बीच तालमेल में अनेक परिवर्तन आये। शिक्षा ने जहाँ व्यवसायीकरण का रूप लिया वहीं समाज ने अच्छी शिक्षा के लिए नए मानक तय किये और समाज का एक बड़ा हिस्सा सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को पुराना और अपर्याप्त समझने लगा। लेकिन आज जिस सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के बारे में समाज अनेकानेक भ्रांतियों से ग्रसित हैं, उसी शिक्षा प्रणाली में बहुत सारे ऐसे विद्यालय भी हैं जो कि अपनी अलग छवि के लिए जाने जाते हैं और ये सब संभव है शिक्षक/शिक्षिकाओं की अलग तरह की सोच के कारण। ऐसा ही एक विद्यालय है, रुद्रप्रयाग जनपद मुख्यालय के लगभग 50 किमी दूर, जखोली विकासखण्ड का, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सौंराखाल जिसमें दो शिक्षक/शिक्षिका हैं, उनमें से एक नाम है श्रीमती रेखा पुरोहित, जिन्होंने अपने घर से दूर समुदाय के बीच में रहकर अपनी गहरी पैठ बनायी है। प्राथमिक विद्यालय सौंराखाल के परिसर में प्रवेश करते ही आपका ध्यान स्कूल में बच्चों द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों पर चला जाता है जिसमें बच्चे अपने छोटे–छोटे समूह में मिट्टी से विभिन्न आकृतियाँ बनाने, चित्रकारी करने, क्राफ्ट का कार्य करने, अक्सर आस–पास के पेड़–पौधों का अवलोकन करने, पत्थरों के साथ खेलने व समूह में एक दूसरे के साथ पढ़ने में व्यस्त दिखाई देते हैं। अलग–अलग समूह में बच्चों के साथ रेखा जी का गहनता के साथ काम करना इस बात को इंगित करता है कि उनका बच्चों के साथ किस तरह का रिश्ता है।

विद्यालय में सबसे खास बात जो हमें देखने को मिलती है और वो है सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान मैत्रीपूर्ण वातावरण। शिक्षकों का बच्चों के प्रति स्नेह और प्रत्येक बच्चे के स्तर को समझना और बच्चों के स्तरानुसार अपनी पाठ योजना बनाना। इस बात का गहरा संकेत है। इस प्रकार शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षकों द्वारा विभिन्न प्रकार की सह–शैक्षणिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं तथा बच्चों के ज्ञान को कक्षा की चारदीवारी के अन्दर सीमित न रखकर उन्हें विभिन्न प्रकार की बाह्य गतिविधियों से भी जोड़ा जाता है। एक और बात आपका ध्यान आकर्षित करती है, इसके पुस्तकालय की जो बच्चों की लम्बाई के अनुरूप है और किताबों का पुराना सा दिखना, फटा होना इस बात का प्रमाण है कि इनका इस्तेमाल कैसे किया गया होगा।

हमने अभिवादन के साथ श्रीमती रेखा पुरोहित से उनके विद्यालय के बारे में जानने और बातचीत करने की इच्छा जाहिर की। श्रीमती रेखा पुरोहित से बातचीत के अंश इस लेख में शामिल हैं। शिक्षिका से बातचीत के दौरान पता चला कि 2012 में उनकी नियुक्ति से पहले यह एक एकल विद्यालय था उनके आने के बाद दोनों शिक्षकों ने मिलकर विद्यालय में कई परिवर्तन और नवाचार किये जिसमें प्रार्थना सभा में वंदना, समूहगान, प्रतिज्ञा और राष्ट्रगान के साथ–साथ सामान्य ज्ञान,

समाचार, आज का विचार, कहानी और कविता सुनना–सुनाना जैसी अनेक गतिविधियाँ शामिल की गयीं और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया गया। स्कूल में स्वच्छता को लेकर पुरोहित मैम ने हमें बताया "जब मैंने यह स्कूल ज्वॉइन किया तो देखा बच्चे साफ–सफाई से स्कूल नहीं आ रहे हैं तो मैंने बच्चों के अन्दर स्वच्छता लाने को लेकर

प्रयास शुरु किये। धीरे–धीरे हमारा प्रयास सफल हुआ और स्वच्छता की प्रक्रिया बच्चों के अन्दर व्यावहारिकता में दिखने लगी। यहाँ स्वच्छता का विशेष ध्यान दिया जाता है और प्रार्थना सभा के दौरान ही बच्चों की साफ–सफाई का निरीक्षण किया जाता है और अगर कोई बच्चा सफाई के साथ स्कूल नहीं आता तो इसको लेकर अभिभावकों को भी सूचित किया जाता है।"

आगे हमने रेखा जी से उनकी शिक्षा और विशेषकर प्रारंभिक शिक्षा के बारे में जानना चाहा। अपने बचपन को याद करते हुए उन्होंने बताया "तब गाँव का वातावरण बिलकुल अलग था और लड़कियों को पढ़ाई के लिए बाहर छोड़ने का चलन नहीं था। गाँव के रहन–सहन और समाज में लड़कियों की पढ़ाई–लिखाई को बहुत कम महत्व दिया जाता था। मेरा परिवार भी इतना संपन्न नहीं था मगर पढ़ाई का शौक और पढ़ाई को लेकर मेरी जिद्दी होने की वजह से घरवालों ने मुझे हाईस्कूल में जाने के लिए हामी भर दी। गाँव की मैं पहली लड़की थी जिसने हाईस्कूल में दाखिला लिया था। काफी संघर्ष के साथ मैंने अपना दसवीं पास किया। पढ़ाई करना मेरे लिए एक जुनून था ताकि मेरा समाज मुझे आगे चलकर अनपढ़ न कहे। एक ऐसा समय भी आया जब दसवीं के बाद मेरा आगे पढ़ने का रास्ता बंद हो गया क्योंकि मेरा परिवार अम्बाला (हरियाणा) पलायन कर गया। मगर मैंने अपनी उम्मीद नहीं छोड़ी और राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली से इंटरमीडिएट पास किया। शादी के बाद मुझे ससुराल की तरफ से पूरा सहयोग मिला और मेरी आगे पढ़ने की रुचि को देखते हुए मेरे ससुर जी ने मुझे आगे पढ़ने के लिए हां कह दिया। इसके बाद मैंने गढ़वाल यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया।

शिक्षक बनने की अपनी यात्रा के बारे में उन्होंने बताया कि मुझे शुरू से ही पढ़ने का शौक था। बचपन में बहुत सारी कठिनाईयों के बाबजूद, अपनी प्रबल इच्छाशक्ति से मैंने इंटरमीडिएट तक की शिक्षा पूरी की थी। बचपन में कभी सोचा नहीं था कि टीचर बनूँगी, मगर शादी के बाद भाग्य ने मेरा साथ दिया और मैंने अपनी बची हुई पढाई पूरी की। ग्रेजुएशन करने के बाद मैंने अपना बी.एड. पूरा कर लिया। मैं अपने घर में अपने बच्चों को खुद ही पढ़ाती थी फिर मेरे पति की प्रेरणा से मुझे इस पेशे में आने की इच्छा हुई। 2008–2012 तक मैं एक निजी विद्यालय में शिक्षिका थी। 2012 में मेरी

पहली नियुक्ति इसी विद्यालय में हुई तब से मैं यहीं कार्यरत हूं।

मेरे अनुसार शिक्षण एक पेशा ही नहीं बल्कि एक सामाजिक जिम्मेदारी भी है क्योंकि इसके साथ समाज और समाज का भविष्य जुड़ा हुआ है। आज भी एक विद्यालय से और एक शिक्षक से प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों के भविष्य को लेकर उम्मीदें रखता है। एक अच्छा शिक्षक होने के लिए बच्चों के साथ बच्चे जैसा व्यवहार करना और उनके स्तर पर जाकर उन्हें सिखाना जरूरी है। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को पढ़ाने के लिए हर एक बच्चे को समझना जरुरी है साथ ही पहले हम खुद सीखें फिर बच्चों को सिखाएं। मेरा बचपन एक गाँव में गुजरा है मगर मैंने इन बच्चों के साथ अपने बचपन को फिर से जिंदा किया। बहुत सारी चीजें मैं खुद बच्चों से सीखती रहती हूँ। मेरा मानना है कि हर एक व्यक्ति के पास ज्ञान का एक भंडार होता है। हम कभी–कभी बच्चों को छोटा समझकर उन्हें अनदेखा कर देते हैं लेकिन यहाँ बच्चों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हर बच्चा सीख सकता है। कोई पढ़ाई में बेहतर होता है, कोई कला में तो कोई व्यापार में, मगर एक शिक्षक होने के नाते बच्चों की रुचि और अभिव्यक्ति को पहचानना और उसके साथ–साथ उन्हें प्रेरित करना सबसे अहम बात है।

रेखा जी का मानना है कि शिक्षा तो सही मायने में वह है जो हमें जीवन जीना सिखाये। जो हमने सीखा है उसको हम अपने व्यवहार में ला पायें। नौकरी पाना अच्छी शिक्षा का उद्देश्य नहीं है बल्कि एक इन्सान सीखी हुई चीजों को अपने जीवन में प्रयोग कर पाये तब शिक्षा सफल होगी। यह जरूरी नहीं है कि हर बच्चा उच्च पद पर आसीन हो बल्कि वह एक अच्छा नागरिक बनकर समाज निर्माण में भागीदार बने यही अच्छी शिक्षा से आशय है।

अपने विद्यालय का उदाहरण देते हुए रेखा जी ने हमें बताया कि जब किसी बच्चे के पास पेंसिल या रबर नहीं होता है तो दूसरे बच्चे अपने आप ही मदद करते हैं। मदद की यह भावना उनमें आपसी सहयोग, सम्मान, संवेदनशीलता और प्रयत्न की भावना को सीखने–सिखाने का हिस्सा बनाने में सहयोग करती है। कभी–कभी जब बच्चे आपस में लड़ते हैं तो वे आपस में ही एक–दूसरे के झगड़ों को सुलझाते हैं। आपस में झगड़े सुलझाने का एक मकसद ये भी होता है कि वे आपस में कुछ तर्क–वितर्क कर पाएं और उनमें तार्तिकता का विकास हो सके। विद्यालय में भी बच्चों में अनुशासन को लेकर जब हमने बात की, तो उन्होंने अपने जवाब में कहा कि, "सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में दण्ड और भय की कोई जगह नहीं है। हमारे विद्यालय में छात्र अपनी बात और अपना काम बिना झिझक और निडर होकर कहते और करते हैं। गलतियाँ तो सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा होती हैं। अगर हम बच्चों द्वारा की गयी चीजों को गलत ठहराएंगे तो इससे उनकी क्रिएटिविटी मर जायेगी और उनके मन में डर पैदा हो जायेगा। बच्चों के कामों को प्रोत्साहित करने से उन्हें नयी चीज करने के लिए मोटिवेशन मिलता है। पढ़ाई मार कर या पिटाई करके नहीं की जा सकती। अगर बच्चा सीख नहीं पा रहा तो इसमें शिक्षक की कमी मानी जानी चाहिए"। इसके अलावा हमने रेखा जी से समाज के कुछ अन्य मुद्दों पर बात की। खुद के काम को ईमानदारी और अच्छे से करना उनकी बड़ी

ताकत है। उनका मानना है कि आगे बढ़ने के लिए अपने आप से ही प्रतिस्पर्धा करो। दूसरों के साथ खुद की प्रतिस्पर्धा करने से हीनता पैदा होती है।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुर्जन लाल जी से और बच्चों से बातचीत करके विद्यालय में विभिन्न कार्यकलापों को जाना और समझा। विद्यालय में बच्चे आत्मविश्वास से भरपूर हैं। अपनी बात को बेझिझक कहना एवं निसंकोच मन से अपने शिक्षक से बात करना, विभिन्न प्रश्न पूछना हमारे अवलोकन का हिस्सा रहा। हमें लगा कि इस विद्यालय का एक मजबूत पक्ष यहाँ पर शैक्षिक एवं अकादमिक वातावरण का निर्माण भी है। दोनों शिक्षक मिलजुल कर शैक्षिक योजना के साथ काम करते हैं। प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति और स्तर के अनुसार पाठ्य योजना बनाई जाती है। बच्चों का सर्वांगीण विकास विद्यालय का ध्येय वाक्य है। शैक्षिक पंजिका के अनुसार अकादमिक गतिविधि के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के सह–शैक्षणिक क्रियाकलापों के माध्यम से कक्षा–शिक्षण, बच्चों के अन्दर एक विशेष ऊर्जा पैदा करता है। अलग–अलग कबाड़ की चीजों से रस्सी बनाना, पेपर क्राफ्ट, रंगोली, राखी, ग्रीटिंग्स आदि बनाना बच्चों को सृजनात्मकता और सौन्दर्यबोध का एहसास कराता है। इस प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियों का उपयोग करके कैसे बच्चों का अधिगम स्तर बढाया जा सकता है इसका एक बेहतरीन उदाहरण यह विद्यालय पेश करता है।

एस.एम.सी. के एक सदस्य जयेंन्द्र सिंह नेगी जिनके दोनों बच्चे पहले पास के ही एक निजी विद्यालय में पढ़ते थे और बाद में उन्होंने अपने बच्चों का नामांकन सरकारी विद्यालय में कराया, इसका कारण उन्होंने इस विद्यालय के शिक्षकों की लगन और मेहनत को बताया। जयेंद्र जी ने बताया कि विद्यालय की छुट्टी के पश्चात पुरोहित मैम का बच्चों को अतिरिक्त समय देना और नवोदय व सैनिक स्कूल की तैयारी करवाना आस–पास के समुदाय का विश्वास जीत गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि कई बच्चे निजी विद्यालय से सरकारी विद्यालय में दाखिला ले पाए। उनके इसी प्रयास के दम पर पिछले साल उनके विद्यालय से 3 बच्चे नवोदय विद्यालय में चयनित हुए। इस दौर में भी जब आज निजी विद्यालय फल–फूल रहे हैं सौराखाल के पास का एक निजी विद्यालय है जो कि कमोवेश बंद होने की कगार पर है और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है और वहाँ से बच्चों का राजकीय प्राथमिक विद्यालय सौराखाल में दाखिला लेना इस बात का द्योतक है कि इस विद्यालय में और वहाँ के शिक्षक/शिक्षिकाओं में कुछ तो अलग है।

(रेखा पुरोहित की नमदिप्त और दीपक रावत से हुई बातचीत पर आधारित)

मुश्किल जैसा कुछ भी नहीं

विजय प्रकाश जैन
सहायक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मेदिया डिंडोर
बांसवाड़ा (राजस्थान)

प्रधानाध्यापक	**–**	**धनजी बुज**
सहायक अध्यापक	**–**	**भूरा लाल बघेल**
भोजन माता	**–**	**पानू देवी**
नामांकन	**–**	**179**